ROOTINDEXING
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in July 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

भारतीय संस्कृति की परिचारक भारतीय चित्रकला

रेनू बाला, शोधार्थी ललित कला विभाग, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार ,हरियाणा harshitaverma876@gmail.com
डॉक्टर बीना दीक्षित, प्रोफेसर ललित कला विभाग, ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार, हरियाणा, भारत

सारांश -

कला किसी भी संस्कृति की वाहिका होती है | किसी भी देश की संस्कृति को जानने और पहचानने के लिए उनकी कला एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है | किसी भी देश या क्षेत्र के यदि इतिहास को जानना हो तो उसकी कला से उसे जाना जा सकता है | कलाये किसी भी देश या क्षेत्र के इतिहास, उसके धर्म , परम्पराओ तथा रीतिरिवाज़ों को जानने का मौका देती है | कलाये कई रूपों में पाई जाती जैसे चित्रकला,वास्तु कला, नाट्यकला, काव्य कला , संगीत कला आदि| भारत में विभिन्न प्रकार की कलाये पाई जाती है | भारत की चित्रकला देश ही नहीं पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है | भारत की लोक कलाओ ने भारत की संस्कृति को आज तक जीवित रखा है , कोई भी देश कितना सांस्कृतिक विरासत का धनी है इस बात का पता उस देश की कलाओ के विषय में पता लगा कर किया जा सकता है |

भारत की चित्रकला ने देश में धार्मिकता को बढ़ावा देने में भी अपना अहम् योगदान दिया है | लोगो में धर्म की भावना पैदा करने में चित्रकला ने अपना एक अलग ही योगदान दिया है | भारत की अनेको लोक चित्रकलाये बहुत ही प्रसिद्ध है जैसे राजस्थानी लोक चित्रकला, थांका चित्रकला, वर्ली चित्रकला, कमलकारी चित्रकला, मुग़ल चित्रकला, मांडना चित्रकला आदि इसके अतिरिक्त भारत में और भी लोक चित्रकलाये है जो भारत की संस्कृति को दर्शाती है और हमारी संस्कृति को जीवित रखे हुए है | भारत अपनी संस्कृति के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है क्योकि भारत जैसी संस्कृति और कला किसी अन्य देश में कम ही देखने को मिलती है इसी लिए दुनियाभर से लोग हर वर्ष भारत में घूमने और भारत की संस्कृति को देखने के लिए आते है |

कीवर्ड - संस्कृति, विरासत, चित्रकला, इतिहास, परंपरा , रीतिरिवाज़ |

परिचय -

कला और संस्कृति में आपस में बहुत ही गहरा रिश्ता है | कला के माध्यम से ही संस्कृति हमारे जीवन में अभिवयक्ति पाती है | कला अपने सांस्कृतिक सरोकारों के साथ ही आगे बढ़ती है , संस्कृति की अभिवयक्ति कला के विभिन्न रूपों जैसे संगीत, चित्रकला, नाट्य कला, साहित्य आदि के रूप में हमेशा जीवंत रहती है | भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भारत का महान इतिहास, विलक्षण भूगोल और सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरुआत और उसके अस्तगमन के साथ फली-फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल हैं। इसके साथ ही पड़ोसी देशों के रिवाज़, परम्पराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है

भारतीय चित्रकला विश्व में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध क्योकि हमारी भारतीय चित्रकला में हमारे देश की संस्कृति के झलक को देखा जा सकता है | हमारी चित्रकला हमारी भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करने में अपना अहम् योगदान देती है | भारतीय चित्रकला में हमारे देश की बदलती संस्कृति को बखूबी दर्शाया गया है , जैसे जैसे हमारे देश में राजनैतिक बदलाव हुए देश की संस्कृति में भी बदलाव आये | इस बदलाव को एक प्रकार दर्शाया गया है -

Scientific Indexing Services

1 **धार्मिक और आध्यात्मिक तोर पर** धर्म और अध्यात्म ने हमारी चित्रकला को काफी प्रभावित किया है जैसे जैसे किसी धर्म में लोगो की आस्था बढ़ती जाती है वैसे ही उसका प्रभाव चित्रकला में देखने को मिलता है , धर्म से प्रेरित चित्रकलाये समाज में अपना प्रभाव छोड़ती है जिससे देश की धार्मिक संस्कति भी प्रभावित होती है |

2 **सामाजिक पहलू** समाज के लोगो की सामाजिक सोच भी संस्कृति को भी प्रभावित करती है जैसे जैसे लोग पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो रहे है वैसे वैसे भारतीय संस्कृति पिछड़ती जा रही है परन्तु चित्रकला की सहायता से हमारे समाज में एक बदलाव देखने को मिल रहे है|

3 **राजनैतिक तोर पर** भारतीय संस्कृति को प्रभावित करने में राजनीती ने अपना अहम् योगदान दिया है जैसे जैसे भारत में अलग अलग शासको आगमन हुआ भारत की संस्कृति में परिवर्तन देखने को मिला है जैसे पहले राजा महाराजाओ ने अपने समय में चित्रकला को धार्मिकता से जोड़ा वैसे ही मुग़ल शासकों ने इसे दरबारी रूप से जोड़ दिया , मुग़ल काल में हिन्दू धर्म की चित्रकारी में कमी आयी | मुग़ल काल के बाद कुछ हिन्दू चित्रकारों ने फिर से हिन्दू धर्म से जुडी चित्रकारी कर लोगो में धर्म की आस्था जागृत की |

भारतीय संस्कृति को दर्शाती हमारे राज्यों की चित्रकलाये

लोक चित्र मूल रूप से भारत के गांवों से संबंधित हैं। वे गाँव के चित्रकारों की चित्रात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं जो रामायण और महाभारत, भागवत पुराण के साथ-साथ दैनिक गाँव के जीवन, पक्षियों और जानवरों और प्राकृतिक वस्तुओं जैसे सूर्य, चंद्रमा, पौधों और पेड़ों से चुने गए विषयों से चिह्नित हैं।

क्र	**चित्रकला**	**राज्य**
1	पट्टचित्रकला	उड़ीसा
2	रंग वाली चित्रकला	कर्नाटक
3	चिनकारी चित्रकला	लखनऊ
4	कमलकारी चित्रकला	आंध्र प्रदेश
5	अरोफ चित्रकला	हिमाचल प्रदेश
6	कालीघाट चित्रकला	कोलकाता
7	मधुबनी चित्रकला	बिहार
8	पिथौरा चित्रकला	गुजरात
9	फण मानचित्र	राजस्थान
10	मंडाना चित्रकला	राजस्थान
11	कोल्लम चित्रकला	तमिलनाडु
12	तंजौर चित्रकला	तमिलनाडु
13	फुलकारी चित्रकला	पंजाब
14	चेरियल चित्रकला	तेलंगाना
15	गोंड चित्रकला एवं बाघ चित्रकला	मध्य प्रदेश
16	वर्ली चित्रकला	महाराष्ट्र

भारत के कुछ हिन्दू चित्रकारों ने अपनी धार्मिक चित्रों के माध्यम से लोगो में धर्म की तस्वीर

ROOTINDEXING
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in July 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

दिखाई जो आज भी लोगो के मन में बसी हुई है , परन्तु इसके विपरीत कुछ चित्रकारों ने भारतीय धर्म में पाश्चात्य को मिला कर इसकी छवि को धूमिल कर दिया | भारत की संस्कृति इतनी सूंदर है की दुनिआ भर से लोग इसकी विभिन्नता से भरी संस्कृति के सुंदरता को देखने के लिए आते है और इसकी यादगार के रूप में यहाँ की बनी चित्रकला, लकड़ी से बने सामान आदि लेकर जाते है, ये एक जीता जागता उदाहरण है की चित्रकला और अन्य कलाये हमारी संस्कृति से जुडी हुई है |

इस सन्दर्भ में कुछ पहलु इस प्रकार है जैसे

- अजंता और एलोरा की गुफाओ में किये गए चित्र से धार्मिकता की झलक देखने को मिलती है |
- बाघ व् एलीफेंटा की गुफाओ की चित्रकारी भारतीय लौकिक जीवन को प्रदर्शित करती है |
- जैन चित्रकला हमारी जैन धर्म को दिखती है |
- पाल चित्रकला शैली बौद्ध धर्म को दर्शाती है |
- द्दशंत शैली चित्रकला नेपाल और तिब्बत की संस्कृति को दर्शाती है |
- मुग़ल चित्रकला शैली मुग़ल काल के शाशको का गुणगान करती है |
- राजपूत चित्रकला शैली राजस्थानी राज रजवाड़ो को संस्कृति को दर्शाती है जो आज भी राजस्थान में बहुत जगह देखने को मिल जाती है |
- बंगाल शैली अंग्रेजो के समय में आई और ये राष्ट्रवाद से काफी प्रभावित रही|

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र के लिए प्राथमिक तोर पर समाचार पत्र पत्रिकाओं, किताबो, शोध पत्रिकाओ से लिया गया है | इसके आलावा लोगो से भी उनके विचार लिए गए है ताकि हमें पता चले की हमारी संस्कृति के विषय में लोगो का क्या मानना है |इस पत्र के लिए सौ लोगो से एक प्रशनावली के जरिये ये जानने की कोशिश की गई है की चित्रकला हमारी संस्कृति को किस हद तक प्रभावित करती है |

विश्लेषण और व्याख्या

इस प्रश्नावली में शामिल होने वाले लोगो में 55% पुरुष , 35% महिलाये और 10% बच्चे शामिल थे इस प्रश्नावली के उत्तरो से ये पाया गया की भारतीय संस्कृति को जीवित रखने के लिए चित्रकला अपना अहम् योगदान दे रही है | धार्मिक चित्रकला लोगो के मन में भगवान् के प्रति आस्था का भाव जागृत करती है | इस में 45% लोगो ने माना की भारतीय धार्मिक चित्रकला भारतीय संस्कति को बहुत ही गहरे तरीके से दर्शाती है क्योकि ये पाश्चात्य सभ्यता से प्रेरित नहीं होती |

लिंग	संख्या	उम्र
पुरुष	45	21 से 55 वर्ष
महिलाये	30	20 से 60 वर्ष
बच्चे	25	14 से 20 वर्ष

लोगो का मत था की भारतीय चित्रकला के कई रूप है इसका एक रूप पाश्चात्य सभ्यता से भी प्रेरित है जो नइ पीढ़ी को हमारी पुराने संस्कारो से दूर कर रही है |लोगो का ये मत था की यदि हम चित्रकला के रूप में भारतीय संस्कृति का ध्यान करते है तो पाते है की युवा पीढ़ी काफी हद तक हमारी संस्कृति से दूर होती जा रही है जो हमारी भारीतय संस्कृति के अस्तित्व पर एक खतरे जैसा है | भारतीय संस्कृति की एक झलक इन चित्रकलाओं के रूप में देखा जा सकता है इससे हमें संस्कृति में आने वाले बदलाव का भी दर्शन होगा

निष्कर्ष

हमारी भारतीय संस्कृति रंग, ख़ुशी, सौन्दर्य की भूमि है इसलिए इस में चित्रकला को महत्व दिया जाता है | भारत की तरह भारतीय विशालता ,विभिन्नता, एतिहासिकता और सौन्दया से भरी है | भारतीय चित्रकला देश की कलात्मक भव्यता को भी व्यक्त करती है | भारतीय कला में भारतीय संस्कृति की एक बहुत लम्बी परंपरा और इतिहास छुपा है | भारतीय चित्रकला भारतीय संस्कृति को एक सौंदर्य प्रदान करती है जो आरम्भ से आज तक कायम है | धार्मिक अनिवार्यता होने के कारण भारतीय चित्रकला वर्षो से विभिन्न संस्कृतिओ , धर्मो और परम्पराओ में अपना अलग ही मुकाम हासिल किये हुए है |

इस प्रकार हम कह सकते है की भारत की कलाओ में भारत की संस्कृति की झलक देखने को मिलती है और हमारी कलाये हमारी संस्कृति को जीवित रखने में अपना योगदान देती रही है और देती रहेंगी | इस कलाओ के माध्यम से हमारी नयी पीढ़ी और आने वाली पीढ़ी हमारी सभी प्रकार की संस्कृति को जानेगी और उसे जीवित रखने में अपना योगदान देंगी |

सन्दर्भ

i. बुन्देलीजहालक.कॉम /भारतीय संस्कृति
ii. कला मूर्त और अमृत -गीता अग्रवाल -स्कोलारी रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिस्किपिलरी स्टडीज -2021
iii. कला और सौंदर्य -डॉक्टर प्रेमलता कश्यप -स्कोलारी रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिस्किपिलरी स्टडीज 2021
iv. कला अभिवक्ति -एक अध्यन -डॉक्टर प्रेमलता कश्यप-श्रृंखला
v. भारतीय कला और संस्कृति - नितिन सिंघानिआ -चतुर्थ संस्करण 2022-23
vi. भारतीय संस्कृत , कला व विरासत -देवदत्त पटनायक
vii. राजस्थान कला और संस्कृति - पवन बनवरिया -एडिशन 2022
viii. भारतीय कला अवं संस्कृत विविध आयाम - डॉक्टर बिना जैन ISBN 9789390179046, एडिशन 2020